सद्गुरु तत्व बोध
SADGURU TATV BODH

नई दिल्ली | श्री साई शके : २९-३०
अंक - १०१ | दिसम्बर - २०१०

ॐ

ॐ श्री साईनाथाय नमः

ॐ श्री सद्गुरूनाथ दादाय नमः

वार्षिक ऊँकार साधना सम्मेलन

Hkkx ,d

वं. दादा जी 6 अगस्त 1967 पहली बार जब लंदन गए, उस दौरान उनकी भेंट ब्रिटीश मध्यस्त से हुई थी, जिनका नाम था मि. ग्रूम (Groom)। मि. ग्रूम ने एक बार वं. दादा जी से पूछा कि "तुम्हारे कितने भक्त कार्य करने के लिए भारत में तैयार हुए हैं? तब वं. दादा जी ने कहा कि "वह अभी सीख रहे है।" तब मि. ग्रूम बहुत जोर से हँसे और कहा कि "तुम्हारे भक्तो ने अभी तक तुम्हे पहचाना नहीं है।" मि. ग्रूम ने आगे यह भी कहा कि "तुम्हारे जैसे माध्यम का उपयोग लोगों के और उनके खानदान के दोषों का परिमार्जन करने के लिए करना, यह उस शक्ति का अपव्यय है, जो शक्ति विश्वशांति के लिए या जगत् की उन्नती के लिए काम आनी चाहिए। मैं भी (मि. ग्रूम) निराकरण करता हूँ, लेकिन मैं आए हुए लोगों को उपासना सिखाता हूँ जिससे वह स्वयं उपासना करके अपने दोषों का परिमार्जन कर सके, या फिर उन दोषों से सामना करने की शक्ति जुटाए।" यह मि. ग्रूम के विचार थे, लेकिन वं. दादा जी ने हमारे दोषों का परिमार्जन करने के लिए अपनी शक्ति का एक भाग सिद्ध किया, जिससे आज भी हम कामकाज और निराकरण पद्धति का लाभ ले रहे हैं। जो खानदान के दोष थे या देवदेवताओं की आधी/अधूरी उपासना थी उनको जोड़ने के लिए अत्यंत साधारण, कोई आम आदमी सहजता से कर सके ऐसे निराकरण सिद्ध किए। तब एक बार वं. दादा जी ने कहा था कि यहाँ शक्ति की सिद्धता इतनी है कि सिर्फ कह दिया कि "तुम्हारा काम हो जाएगा, तो दोष निकालने के लिए गुरूशक्ति की धारणा होने लगेगी। बाकी कुछ करने की आवश्यकता नहीं है।" फिर यह निराकरण क्यों दिये? तो उसकी दो वजह है – 1) मेरे सिर्फ कहने पर तुम्हारा विश्वास नहीं होगा लेकिन 30 पैसा या 1.25 रू. शनिचर को हनुमान जी के मन्दिर में रखने के लिए कहा तो उस रू. 1.25 रू. देने की सेवा पर तुम्हारा विश्वास होगा। तुम्हारे 1.25 रू. देने की सेवा में हनुमान जी को क्या मिलने वाला है? उनकी शक्ति तो इस कार्य में पूरी तरह से शामिल है लेकिन अगर यह नहीं कहा और सिर्फ बोला कि जाओ तुम्हारा काम हो जाएगा तो

Publisher
Sri Saikalp Adhyatm Sanstha
"Sai Niketan"
New Delhi - 110025
Ph. : 26956561
E.mail : saikalp@gmail.com
Dadab6@gmail.com
Web : saishraddha-World.com

Parton
Lalita Bhavani Shankar Bhatte

Editorial
Vijay Kumar Varma
Jogesh Grover

Suscription
Inland
Yearly : Rs.100.00
Life time : Rs.500.00

Overseas
Yearly : US$ 50.00
Life time : US$ 200.00

Printed By
Shaarp Advertising
Cell : 09810284136

Published Every Month

©All rights reserved with Publisher

तुम्हारे मन में शंका पैदा होगी और दी हुई प्रार्थना एकाग्र मन से नहीं होगी और मन की धारणा न होने से गुरू शक्ति की धारणा नहीं होगी। यह शंका निकालने के लिए शनिवार का दान बताया। सिर्फ यह दान काम नहीं करता तो उसका मनन् जो होता है, मतलब तीन दिन पहले से सोचना कि शनिवार को दान निकालना है, शुक्रवार को छुट्टे पैसे निकाल कर रखना इत्यादि, इत्यादि। यह चिंतन मन की धारणा करता है जिससे गुरूशक्ति प्रवाहित होती है। और दोषों का परिमार्जन करती है। इस प्रकार के निराकरण देने की दूसरी वजह यह थी कि जब कोई सेवक कामकाज करे, जो उसका माध्यम पूरी तरह तैयार न होने के बावजूद आए हुए आदमी का काम पूरी तरह होने के लिए सिद्ध किये हुए निराकरणों की आवश्यकता होती है। यह निराकरण विभूतियों ने कई साल उच्चार करके सिद्ध किए है, जो आसन सिद्धता (कार्यकेंद्र में) होने से अपने आप ही कार्य करते हैं।"

हम जैसे लोगों के कई साल के दोष इतने आसान निराकरणों से निवारण करने की वजह यह थी कि हम लोग जल्दी से जल्दी आगे के कार्य के लिए तैयार हो जाएँ।

एक तरफ कामकाज और निराकरणों से वं. दादा जी सेवक जमा कर रहे थे और दूसरी तरफ विश्वशांति और लोक कल्याण के लिए ब्रह्माण्ड शक्ति के आह्वान की तैयारी चल रही थी। 'उत्पत्ती' और 'स्थिति' शक्ति का आह्वान होने के बाद कारण दीक्षा देने के लिए लय शक्ति मतलब रूद्र शक्ति का आह्वान करना था। तब हाजी हजरत सलीम बाबा ने वं. दादा जी से कहा कि कारण दीक्षा प्रवाहित और कार्यान्वित करने का माध्यम है "ऊँकार"। यह ऊँकार लाना पड़ेगा, वाड़ी में जो सन्यासी बैठा है उससे। उस प्रकार श्री स्वामी नरसिंह सरस्वती से ऊँकार प्राप्त किया। उसे सौम्य करने के लिए 11 पूर्णीमा हवन किया। पूर्णीमा क्यों? तो 'उत्पत्ती' और 'स्थिति' शक्ति सूर्य से सीधी पृथ्वी पर आती है। लेकिन 'लय' शक्ति (Perfection) चन्द्रमा से, जो सूरज का प्रकाश पृथ्वी पर आता है उससे आती है और पूर्णिमा के दिन यह प्रकाश सबसे अधिक अर्थात लय शक्ति पूरी तरह प्रवाहीत होती है। 11 पूर्णिमा हवन के बाद महारूद्र स्वाहाकार किया। तब कारण शक्ति अर्थात विश्वशांति की/लोक कल्याण (तीनों लोकों का कल्याण) की शक्ति प्रवाहित हुई। तब निराकरण शक्ति वं. दादा जी ने वहाँ अर्पण किया और आगे का कार्य–कारण दीक्षा और महाकारण अवस्था कार्यान्वित करने का कार्य सम्पूर्ण रूप से आरम्भ किया; **उसका साधन मतलब–साधना सम्मेलन (Seminar)।**

– यह सेमीनार ब्रम्ह मुलाखात द्वारा सुनना यहीं तक सीमित नहीं है तो यह एक संस्कार है। काया–वाचा–मन पर होने वाला संस्कार।

– इसमें की गई सामुहिक ऊँकार साधना, आरती साधना और मुलाखात साधना से जो शब्द ब्रम्ह प्रकट होता है उसके स्पंदन शरीर पर आघात करके शरीर की पेशियों का विकास करते है।

– इन पेशियों के विकास से 'आकार' अवस्था की प्राप्ती, जिसमें विषय की धारण पूरी तरह होकर विचार प्रकट होता है।

अकिसित पेशी : विषय की अपूर्ण धारणा – विकार
विकसित पेशी : सम्पूर्ण धारणा – विचार
इससे किया जाने वाला कार्य कर्मेंद्रीय और ज्ञानेन्द्रीयों के माध्यम से होता है।
ज्ञानेन्द्रीयों की विकसित अवस्था : अन्नमय कोश प्रधान
जीवन से आनन्दमय कोश प्रधान जीवन तक

lkèkd voLFkk dh 'k:vkr

गुरूकृपार्शीवाद बीज दीक्षा ब्रम्ह

आकार → साकार

भाव → भावातीत

vkdkj voLFkk ls i:'kh;k dk fodkl →

धारण शक्ति बढ़ना → विषय की धारणा
बढ़ना → ज्ञानेन्द्रीयों से काम

इस अवस्था में षड़विकार कम होते हैं। क्रोध कम होता है, क्योंकि कोई आदमी अगर गलत बर्ताव करता है तो भी बर्ताव करते समय जो आकार की कल्पना उस व्यक्ति ने कि थी वह आकार/विषय धारणा होकर 'आकार अवस्था में' उस व्यक्ति की सोच को समझ सकता है।

Hkko voLFkk → कार्य केन्द्र पर आने के बाद निराकरण से या आरती माध्यम से बीज या ब्रम्ह (गुरू कृपाशीर्वाद की) धारणा की जाती है। तब भाव अवस्था में ईश्वर है यह विश्वास पैदा होता हे लेकिन यह कहाँ कैसा है? यह सवाल पैदा होता है।

आकार से साकार अवस्था में जाते समय **साधक अवस्था** की शुरूआत होती है।

आकार अवस्था में विषय की धारण पूरी तरह होने लगती है और भाव अवस्था में 'ईश्वर' (गुरू) है यह विश्वास प्राप्त होकर उसका शोध शुरू होता है। साकार अवस्था में प्रमुख विषय ईश्वर (गुरू) हो जाना है। हर एक सोच/कार्य गुरू से शुरू होता है और आकार में विलिन होता है।

भावातीत अवस्था में ईश्वर (गुरू) विषय की धारणा होती है। तब शोध भी होता है और बोध भी होता है। गुरू के अस्तित्व की कोई शंका नहीं रहती। जब "गुरू" यह विषय जीवन में प्रमुख होता है और पूरी तरह धारण होता है तो खुद साधक को अपने दिमाग से कोई कार्य नहीं करना पड़ता; तो वह अवस्था (गुरूतत्व की धारणा) कार्य करती है।

उस अवस्था को बताने वाली आरती :

दत्ता चरण सेवा तुझी, देई आस नाही दुजी।
तब कृपेभी धन्य जाहलो, भव भ्रांती तुटली

परमपदी पर ब्रम्ह मुर्ती, अंगे भेटली।।
अनउदयास्तव बोधरवी हा हृदयी प्रगटला
स्थिरचर व्यापुनी अनन्तरूपे अखंड भेटला।।
भावाचा भुकेला सुलभ, दीन दासाला
गुप्तरूपे जनी नांदूनी भेटे अनन्य भक्ताला।।

महाकारण अवस्था

ब्रम्ह बीज गुरूकृपार्शीवाद

- आकार – साकार – निराकार → साक्षात् आकार
- भाव – भावातीत – रंगातीत → शब्द ब्रम्ह
- स्वानंद – परमानन्द – ब्रम्हानंद →सच्चिदानंद

निराकार/रंगातीत अवस्येन ईश्वर शक्तिची
सम्पूर्ण धारणा → गुरू–शिष्य न उरला →
गुरूं पूर्णपणे एकरूप होणे
ही अवस्था प्राप्त झालयावट कार्यान्वित होण्यासाठी महाकारण अवस्था → प्रमुख
माध्यम शब्दब्रम्ह गुरूंचा साक्षात आकार
आपल्यान, इतरांना जाणविणे : दुसप्याला
ईश्वर दाखविण्याची अवस्था
गुरू भजनी मज सवे माझे गुरू नावले
माझे → ब्रम्ह प्रकटले नादातच मज
गुरू रूपे गवसले माझे
ही प्राप्ती झाल्यावर सदैव गुरू चरणांशी
रहाणे आणि गुरू हा विषय प्रत्येक पेशींमध्ये
समावेण म्हणून :– अनन्य भावे शरण भी आलो
आणि 'भागणे तुज एक दत्ता. बेडा करी मज आता'।

स्वानंद	परमानन्द	ब्रम्हानंद
(प्राथमिक अवस्था)	सम्पूर्ण पेशी	ईश्वर शक्ति
आरती में आनन्द का	कार्यान्वित होने पर	गुरू शक्ति की
अनुभव	गुरू विषय की धारणा	धारण
	और ज्ञानेन्द्रीय – कर्मेन्द्रीय	
	से आनन्द का अनुभव लेना	

सच्चिदानन्द → महाकारण अवस्था – परमोच्चं अवस्था

वहाँ पहुँचना है इसलिए रोज सच्चिदानन्द सदगुरू.....

साईनाथ महाराज की जय.....

कुछ लोगां ने वं. दादा जी को कहा था कि, " आपका चरीत्र हमें लिखकर छापना है।" तब वं. दादा जी ने कहा कि इसकी मुझे आज्ञा नहीं है और मेरा चरीत्र तो 2–3 लाईन में पूरा हो जाएगा। मैने जो भी कार्य किया या कर रहा हूँ वह मेरे गुरू के आज्ञानुसार उसमें मैने कुछ किया ऐसे कह नहीं सकता। सिर्फ दो चीजों की प्राप्ती हुई जो मेरा चरीत्र हो सकता है, पहली चीज यह कि कार्य के आरम्भ में मैने श्री दत्त गुरू को ऐसी प्रार्थना की थी कि " जो कार्य आप मेरे माध्यम से करना चाहते है वह अगर पूरी तरह सम्पन्न हुआ तो मुझे आपसे उसकी प्रचिती/प्रतिसाद चाहिए। कितने लोग इस कार्य में आते है, खुशामद करते है तो भी मुझे उसे कोई वास्ता नहीं क्योंकि लोगों की अपेक्षा पूरी हुई तो वे अच्छा बोलेंगे नहीं तो बुरा बोलेंगे। तो मुझे आपसे प्रतिसाद चाहिए।" इसका प्रतिसाद उन्होंने वाड़ी में महारूद्र स्वाहाकर होने पर मुझे श्री स्वामी नृसिंह सरस्वती जी की छाटी (वस्त्र) पहनाकर दिया। और दूसरी चिज मतलब देवदेताओं ने इस गुरू कार्य में शक्तिपीठ स्थापना के दौरान मान्यता देकर अपनी शक्ति उसमें विलिन की।

आज हमार नसीब है कि हमें ऐसे गुरू ने अपनी झोली में लिया है। सैंकड़ों सालों से जो देवदेवता इस सृष्टि की रक्षा कर रहे है, **वे उनका कार्य कराने के लिए, वं. दादा जी के वजह से, हमारे माध्यम का उपयोग करना चाहते हैं।** इससे ज्यादा अब क्या मांगना है? किसी को अपने जीवन में इससे ज्यादा कुछ मिले ये सम्भव नहीं है। अब कोई विषय नहीं चाहिए (भूक्ती), न ही मुक्ति चाहिए क्यों कि मुक्ति मिली तो ऐसे गुरू का (वं. दादा जी) ज्ञान कैसे रहेगा। हमारे गुरू का विस्मरण हमें कई जन्मों तक न हो यही अब मांगना है।

न लगे भुक्ति, न लगे मुक्ति, वांछित जानाला तुझे पायी भाव जडला।
प्रेम दत्ता पायी पडलो भक्ति दे मज़ला,
घेई नित्य सेवेला, घेई नित्य सेवेला।।

AA 'kHk Hkor AA

Hkkx nk

निराकरण : → मुनष्य जीवन के दोषों का निवारण

गुरूशक्ति : → पंचमहाभूततत्वों का संतुलन

→ देहिक शक्ति + आत्मिक शक्ति का संतुलन

→ समाधान की प्राप्ती

माध्यम : → वायु तत्व

→ श्वसन – प्राणायाम

श्वसन क्रिया से लिया हुआ श्वास/प्राण पाँच हिस्सों में बटता है →

प्राण – अपान – व्यान – उदान – समान । इन पाँच प्राणों से → पंचप्राण से पंचमहाभूत तत्वों का संतुलन रहता है। यह सोच कर विशिष्ठ पद्धति से श्वसन करना मतलब प्राणायाम – जो योग साधना का प्रभुख हिस्सा है।

इस प्राणायाम को वं. दादा जी ने आरती साधना और ऊँकार साधना में अंतर्भूत करके गुरू शक्ति को जोड़ दिया। इसलिए नए भक्त को एक–दो बार आरती सुनने के बाद सिर्फ कार्य केन्द्र पर आकर समाधान की प्राप्ती होती है।

ऊँकार साधना सम्मेलन ए कारण दीक्षा कार्यान्ति करना कारण दीक्षा कार्यान्ति करने के लिए जरूरी चीज – माध्यम – **साधक अवस्था में होना**। इसलिए

साधना सम्मेलन → आए हुए सेवकों में साधक अवस्था कार्यान्वित करना।

साधना सम्मेलन में आते समय भक्तों की साधारण अवस्था इस प्रकार →

– आने से पहले : 5–6 दिन आरती – मुलाखात – ऊँकार साधना करना/सुनना मुश्किल लगता है।

– सम्मेलन के पहले दिन : आधा विषय समझ में आता है, आधा नहीं। सिर्फ आध्यात्मिक विषय से दो अवस्था होती है (यानी क्या सही है क्या नहीं) भक्त समझता नहीं कि खुद क्या कर रहे है, लेकिन पहले दिन के अन्त में समाधान की प्राप्ती होती है।

– सम्मेलन के अन्तिम दिन : जाने के लिए बुरा लगता है। सम्मेलन और कुछ दिन चलता रहे ऐसा लगता है। अगले सेमीनार में जरूर आना है ऐसा निश्चय करते हैं।

वास्तविक रूप से और आध्यात्मिक रूप से होने वाली क्रिया इस प्रकार है :

पहले दिन → गुरू शक्ति का आह्वान →

पंच प्राणों का कार्य → शरीर में पंचमहाभूत तत्वों का संतुलन – समाधान प्राप्ती की शुरूआत।

आरती साधना : मुलाखात साधना → शब्दब्रम्ह/ स्पशब्रम्ह – आकार अवस्था की प्राप्ती → शरीर की पेशीयों का विकास।

मुलाखात साधना : आकार अवस्था में गुरू/ गुरूशक्ति/ईश्वर यह विषय प्रवाहित करना → साकार अवस्था की शुरूआत।

दैहिक शक्ति : आत्मिक शक्ति – गुरूशक्ति का संतुलन (बराबर–बराबर) मतलब – आकार अवस्था – साकार अवस्था की प्राप्ती का मतलब → साधक अवस्था कार्यान्वित होना।

जिससे : पंचमहाभूत तत्व और पंचप्राण कोशों का संतुलन साध्य होकर पंचतन्मात्रों का काम शुरू होना → शब्द ब्रम्ह और स्पर्श ब्रम्ह → यही कारण दिशा कार्यान्वित करने का माध्यम है।

ध्वनी लहरी ध्वनी लहरी] प्रकाश

शब्दब्रम्ह + स्पर्शब्रम्ह + गुरूशक्ति

इस अवस्था में की गई सामुहिक ऊँकार साधना कारण दीक्षा को कार्यान्वित करती है।

प्रकाश रूप ऊँकार → शब्दब्रम्ह की ध्वनी + स्पर्शब्रम्ह की लहरी

आसमान से अगलीबार जैसे जाता है और तीन प्रमुख कार्य करता है :

– वातावरण की आत्माओं की मुक्तता – कारण दीक्षा से उनके अगले जन्मों की तर तूद

– जगत के लोगों के शरीर पर आघात करके उनकी पेशीओं का विकास→ आकार अवस्था जिससे विषय की सम्पूर्ण धारणा और विकारों के बदले विचारों का निर्माण → विश्वशांति।

– यही सही अर्थों में लोक कल्याण/मानव कल्याण

→ तीनों लोकों का कार्य।

→ तीनों कालों के मानव का (जो थे, जो है और जो जनम को आने वाले है) कल्याण

यह कार्य गुरूशक्ति से होते समय हमारे माध्यम को हमारे अंजाने में साधक का लाभ और उसमें से कार्य करने का समाधान मिलता है। यह समाधान हमारी आत्मा को प्राप्त होता है, जिससे सम्मेलन के अन्तिम दिन यहाँ से जाते समय दुःख होता है। इसका अनुभव हमेशा प्राप्त करने के लिए हम इस गुरू कार्य से जुड़े रहते हैं जिससे वह आत्मा हमें साधक अवस्था प्राप्त कर लेने का प्रयास करता है। आने वाले हर एक पल में हमारी उन्नती करने का प्रयास करता है। इसकी तैयारी अब हमें करनी है।

AA ‘kHk Hkor; AA

Hkkx rhu

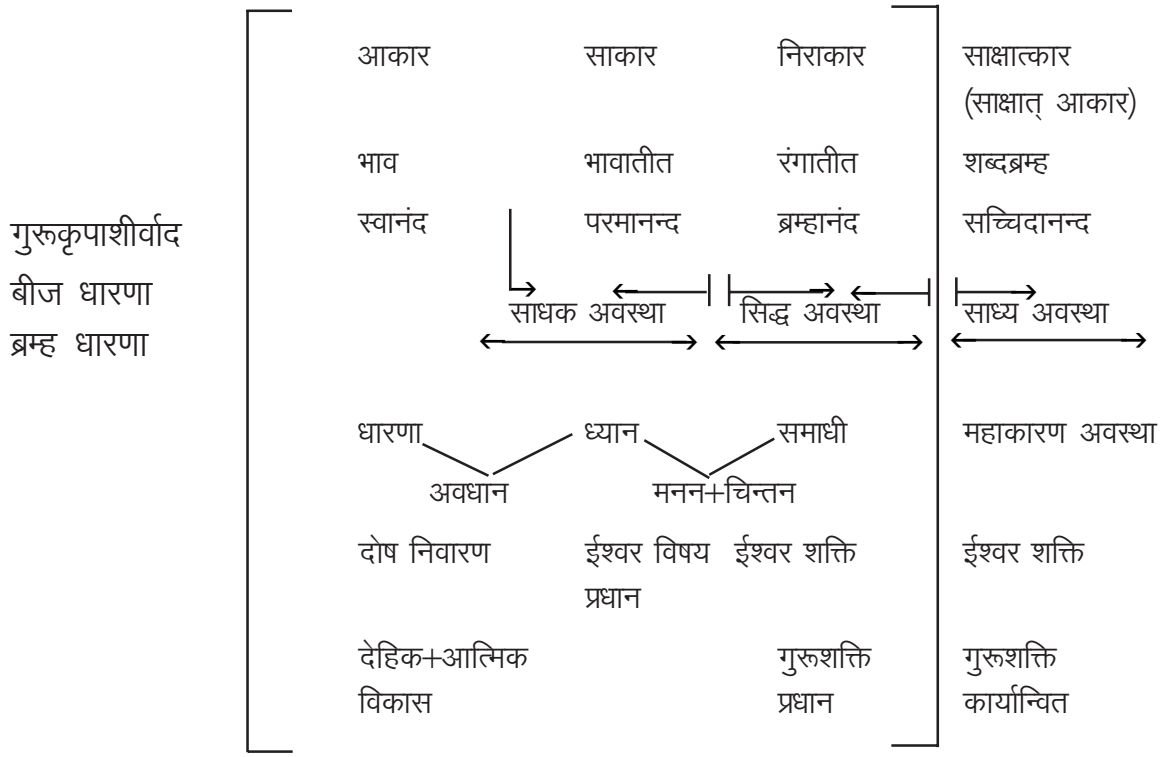

गुरूकृपाशीर्वाद बीज धारणा ब्रम्ह धारणा	आकार	साकार	निराकार	साक्षात्कार (साक्षात् आकार)
	भाव	भावातीत	रंगातीत	शब्दब्रम्ह
	स्वानंद	परमानन्द	ब्रम्हानंद	सच्चिदानन्द
	साधक अवस्था		सिद्ध अवस्था	साध्य अवस्था
	धारणा	ध्यान	समाधी	महाकारण अवस्था
	अवधान	मनन+चिन्तन		
	दोष निवारण	ईश्वर विषय प्रधान	ईश्वर शक्ति	ईश्वर शक्ति
	देहिक+आत्मिक विकास		गुरूशक्ति प्रधान	गुरूशक्ति कार्यान्वित

हम कुछ चाहते है। हमारी ओकाद क्या है। इसलिए – “अक्षम दीन दास तुझा मी केवी करू उत्सवा.....रंगातीत निज रंग रंगूनी खलवी प्रेम डोही।”

आज तक कई साधू–संत आकर कार्य कर के गए। उन्होंने समाधी अवस्था की प्राप्ती की ओर रंगातीत अवस्था का अनुभव लिया। उनका महात्म उनके देह–त्याग के पश्चात मालूम हुआ क्योंकि शरीर के माध्यम में जो ईश्वरीय शक्ति संचित की है वह देह त्याग के बाद वातावरण में फैल गई और फिर लोगों ने उनके स्थान को तीर्थ क्षेत्र बनाया। हमारे गुरू ने वं. दादा जी ने सिद्ध अवस्था के आगे की अवस्था कार्यान्वित कर के। जिससे यह गुरूशक्ति विश्व में कार्यान्वित हो, यानी साक्षात्कार अवस्था। वं. दादा जी कहते थे कि जो अनुभव और प्रेम उन्हें उनके गुरू से मिलना है वही अनुभव और प्रेम उनके (वं. दादाजी) माध्यम से भक्तों को मिलना चाहिए। यह अवस्था कार्यान्वित होने का माध्यम – शब्द है और ऐसी सिद्धता की कि हमारे जैसे आम आदमी के माध्यमों से भी वह शक्ति कार्यान्वित हो सके। यह अवस्था ‘सच्चिदानन्द’ प्राप्त करती है।

वं. दादा जी ने कहा था कि जो चाँदी की प्रतिमाएँ है (श्री साई शक श्री कारण) उनमें निराकरण शक्ति की सिद्धता है, जिससे मानव के जन्म का कारण उदित हो, वही साधक अवस्था की शुरूआत है। (हमारे जैसे लोगों को) इसका अनुभव

आने के लिए कैसे सिद्ध की तो "तू ची माता, पिता, बन्धू तू सोयरा" मतलब जब गुरू की शरण में सम्पूर्ण रूप से जायेंगे तो पिछले जन्म के कर्म से न जी कर श्री गुरू के धर्म से (पुण्याई से/सिद्धता से) जियेंगे।

इस अवस्था की प्राप्ती करने के लिए आसान माध्यम – शब्द ब्रम्ह है। इसके लिए सबसे जरूरी बात यह कि अन्य किसी भी विषय का लोभ न होकर सिर्फ 'गुरू' यही विषय प्रधान है ऐसा सोच और अनुभव हर पल लेना चाहिए।

आरती का मूल तत्व–आर्तना – प्रकट होकर, मतलब जिस गुरू ने हमारा इतना विकास किया उस गुरू की/गुरूशक्ति की अनुभव लेने के लिए/दर्शन लेने के लिए आरती करना। यह आर्तता भाव और भावातीत अवस्था में मिल गया तो रंगातीत अवस्था प्राप्त हुई। हमारे हर एक रंग में गुरू का रंग मिल गया यह अनुभव मतलब 'समाधि' अवस्था।

हम बस से/ ट्रेन से यात्रा करते समय कोई मजदूर या गरीब आदमी हमारे पास बैठे तो हम बाजू में हो जाते है, यह सोचकर कि उसका स्पर्श हमें गलती से भी न हो। आज हमारे गुरू इतनी उच्च अवस्था में होकर भी हम जैसों के विषयों में शामिल हुए न कि किन्ही खास सामान्य व्यक्तियों के बाजू में बैठना था और सेकड़ों सालों में कर्म के कारण, धारण/दोषों के और अनजान के कारण आज ईश्वर का तो दूर वह खुद का काम भी नहीं कर सकता, उस मानव को गुरू का मूल स्वरूप प्राप्त कर देने वाला यह कार्य है; इसमें आवश्यताओं के सभी दोषों का निर्मूलन करके सभी जरूरी सिद्धता विभूतियों ने समायी है। इसलिए "दृष्टा सद्गुरू दृश्य शीष्य"। हमें समझना चाहिए कि जब हमारे माध्यम से कोई कार्य होगा तो हम वो नहीं कर सकते, उतनी ताकत हममें नहीं है – करवाने वाले तो सिर्फ गुरू हैं लेकिन लोगों को तो हम नज़र आयेंगे–"दृष्टा सद्गुरू दृश्य शीष्य"। और आज का अर्थ यह है कि कोई अमीर आदमी का बेटा जैसे अपनी आदतों से, पहनावे से अमीर लगता है वैसे ही जैसे हमारे गुरू है – "दृष्टा सद्गुरू" – सर्वज्ञानी, सर्वव्यापी, जिनका विश्व पर सर्वबहुमत्व है, उनके शिष्य हम हैं तो हम वैसे ही दिखने चाहिए– "दृश्य शिष्य" इस पहचान के प्रयत्न और विचार करना चाहिए "खूण मनी उमगलो"।

ऐसे महान गुरू से अब हम कब मिलेंगे, जब हमारा खुद का आकार–निराकार होगा, मतलब गुरूशक्ति की सम्पूर्ण धारणा जब हमारे माध्यम में होगी। शास्त्रों के अनुसार इस अवस्था के लिए सन्याय/वैराग्य जरूरी होता है। सन्यासी वह जो अपने खुद का श्राद्ध करके वैरागी बनता है। यह अवस्था संसारी लोगों के लिए मुमकिन नहीं है। लेकिन गुरू ने आज क्या प्राप्त करके दिया। क्या यह हमारी ताकत या औकात है? यह सोच कर गुरू का चिन्तन करना, स्मरण करना तथा उस चिंतन में समा जाना।

साकार अवस्था से सिद्ध अवस्था में जाते समय तन्मात्रों का अनुभव आता है। पहले शब्द तन्मात्र और फिर स्पर्श तन्मात्र फिर रूप.....रस.....गंध..... ।

यह सब अवस्थाएँ जैसे दिखती है वैसे आसान नहीं है। दो अवस्थाओं के बीच में कई जन्मों का फासला होता है जो हमारे गुरू ने कम किया है। वं. दादा जी ने कहा था कि जैसे अमीर आदमी तीन तरह के होते हैं – कर्म श्रीमंत, जन्म श्रीमंत और गर्भ श्रीमंत वैसे ही सिद्ध अवस्था के माध्यम होते है– कर्म सिद्ध (उपासना से) और गर्भ सिद्ध (जन्म के पहले से)। वं. दादा जी गर्भ सिद्ध थे। इसलिए यह महान कार्य कर सके। वह विभूतियों का आगमन होने से पहले भी कामकाज/मार्गदर्शन करते थे और यह सब मुलाखत के विषय भी उन्हें ज्ञात थे लेकिन पच्चीस साल उन्होंने मौन रखा और विभूतियों ने उनके माध्यम से कार्य किया क्योंकि सैकड़ो साल पुरानी विभूतियों को पता था कि मूलतः इस मनुष्य का माध्यक किस प्रकार का है, वह ईश्वर का रूप/अंश विषयों को धारण करने के लिए ध्यान देना। उसके लिए अवधान जरूरी है। आचरण्ध में अवधान। और साधक अवस्था में सावधान रहना क्यों कि इस गुरूमार्ग में साधक अवस्था में गुरू सिद्ध और साध्य अवस्था के अनुभव प्राप्त कर लेते हैं उन्हें जानना और अनुभूती लेकर साकार अवस्था में जाना जरूरी होता है। तब कार्य करने की इच्छा होती है लेकिन यह अनुभव खुद की उन्नती के लिए होता है → इसलिए →"आरम्भ नाही, शेवट कैसा मध्य स्थितीला विसरू नको। संसारामध्ये एकही पारूल अनुभवारिण टाकू नको।।"मतलब गुरू का/गुरू शक्ति का अनुभव लिए बिना संसार में एक भी स्टेप मत उठाओ।

तब भाव अवस्था से भवातीत अवस्था मतलब ईश्वर का शोध और बोध प्राप्त होना। आरती गाते समय रोमांच आना/ रोना आना। जब से केन्द्र पर आ रहे है तब सै आरती तो वही है लेकिन अब अनुभव अलग है क्योंकि हमारे माध्यम का विकास हो रहा है।

इस साधक अवस्था से सिद्ध अवस्था में जाते समय मनन् और चिन्तन जरूरी है। मनन् तो आज भी हम करते है कि दो साल पहले उस आदमी ने मुझे ऐसा बोला या कोई आदमी मुझसे बिल्कुल नहीं बोला। लेकिन अब इस घटनाओं को छोड़कर किस चिज का मनन करना है, तो जब हम इस मार्ग में आए तो कोई मामूली दुःख निवारण ईश्वर है या गुरूशक्ति है ऐसा विश्वास पैदा हुआ मतलब आकार अवस्था और भाव अवस्था प्राप्त होने लगी।

इस समय साधना/उपासना उसे दी गई । और नियमित रूप से कार्य केन्द्र पर आकर आरती साधना करके उसे साधना का आकार प्राप्त होने लगा। भक्त के काया–वाचा–मन को साधना को आकार प्राप्त होना → साधक अवस्था की शुरूआत। साधना का आकार → हमारे काया–वाचा–मन में होने वाला अच्छा बदल → जो हम आज सोचे कि इस कार्य में आने से पहले हमारे आचार, उच्चार, विचार कैसे थे और अब कैसे है। खुद का अनुमान खुद लगाना।

आकार अवस्था से साकार अवस्था में जाते समय धारणा अवस्था की अनुभूति। पहले विषय की सम्पूर्ण धारणा होकर षड्विकारो पर थोड़ा संयम प्राप्त होना औरि फिर आरती साधना, ऊँकार साधना और मुलाखात साधना से गुरूशक्ति का अनुभव आना। यहाँ गुरूशक्ति धारणा का माध्यम निश्चित होना और उस गुरूशक्ति का अनुभव और ज्यादा मिले ऐसा प्रयत्न शुरू होता है। तब ईश्वर या गुरू यह प्रमुख विषय बनता है और आकार से साकार अवस्था बनती है। तब गुरूशक्ति धारणा का जो माध्यम है (साधना) वह निश्चित होकर ध्यान अवस्था की प्राप्ती मतलब उस ईश्वर –आकार – शरीर के पेशीयों का विकास।

विषय धारणा से विचार पैदा होना (विकार नहीं, कोई आदमी पिक्चर बनाता है, हमें बेकार लगता है। उस आदमी के माध्यम में जो विषय का आकार धारण हुआ, वो आकार वह आदमी पिक्चर में दिखाने की कोशीश करता है लेकिन उस आकार को हम देख नहीं सकते और उस इन्सान के कई महिनों की मेहनत को बेकार बोलते हैं।

आध्यात्मिक रूप में कोई वं. दादा जी का पत्र पढ़ा तो उन्होंने वह पत्र लिखते समय जो आकार (विषय का आकार) सोचा वह धारण करने की कोशीश करनी चाहिए। जैसे हमारे माध्यम का विकास होता है वैसे उसी आरती में या गुरूप्रसाद में या आत्मनिवेदन में या कोई मुलाखात सुनते समय अलग–अलग अर्थ समझते है।

जो वैज्ञानिक नई खोज करते है वह सभी विषय विश्व में पहले से है लेकिन वह माध्यम विश्वशक्ति धारण करके उस विषय का आकार देख पाता है जिसको वह फिर भौतिक रूप में लाता है।

आकार अवस्था से साकार अवस्था में जाते समय साधक अवस्था की शुरूआत होती है। भक्त कार्यकेन्द्र पर आया – उसे गुरूकृपाशीर्वाद मिला। प्रत्यक्ष ब्रम्ह या बीज की धारणा हुई। निराकरण से दोषों का निर्मुलन हुआ और जो सोने की प्रतिमा है उसमें वं. दादा जी ने की हुई पारमार्थिक सिद्धताएँ–महाकारण अवस्था तक–समाई हुई है। यह अवस्था कार्यान्वित करने के लिए ताम्बे की नारायणी प्रतिमा। यह तरतूद हमारे जैसे माध्यमों से गुरू शक्ति कार्यान्वित करने के लिए वं. दादा जी ने कर रखी है। हमें इस कार्य में जुड़ते समय जो अनुभव, प्रेम श्री गुरू जी से मिला उसी प्रकार का प्रेम और अनुभव हमारे माध्यम से लोगों को मिले यही सद्गुरू के चरणों में प्रार्थना।

"ताच दुव तु आम्हासी देई, विनती करी तो आम्ही पायी।
मानवनेचा महामंत्र तो देउ जगताल ।।

AA 'kHk Hkor| AA

पिछले जन्मों से पाई किसी बात में रूचि और पिता या कुछ महत्वपूर्ण व्यक्तियों का आपके जीवन पर पहले से निर्धारित क्या और कब प्रभाव है, इसका रहस्य तो सिर्फ बाबा, दादा ही जानते है।

किन्तु आज जब सोचता हूँ कि मेरे बुद्धि जीवी पिता ने मुझे छः वर्ष की आयु में यह शेर याद करवा दिया था जिसका पूरा अर्थ तो मैं काफी समय बाद ही समझ पाया तो कुछ अचरज़ तो होता है।

हजारो साल नर्मिस अपनी बेनूरी पे रोती है,
फिर कहीं जाकर के होता है चमन में दीदवर पैदा।

Translation :-

For Thousands of years iris the human eye shaped flower cries of being without light,
Only then is the one with vision born in the orchard.

बाबूजी अकसर विभुतियों के जन्म और मकसद के बारे में बताते हैं। लेकिन किसी भी बात को एक पारमार्थिक या रुहानी दृष्टिकोण से देख पाना, यह खूबी तो हमें ऊपर से ही आती है।

इसका श्रेय हम तो ले ही नहीं सकत, किशोरावस्था में पिताजी ने हँस कर मुझे एक Non belive के दृष्टिकोण (Perspective) से यह शेर सुनाया :

रहता है इबादत में हमें मौत का खटका।
हम यादे खुदा करते हैं कर ले ना खुदा याद।।

Translation :-

I fear death in my effort of praying,
What is God recalls us when we remenber him

मुझे एक शाम अचानक ही उन्हीं दिनों में इस शेर का करारा जवाब मेरे दिमाग में कौधा :

Translation :- The rejoinder to this couplet came to my mind quite naturally one evening.

ऐ सोचने वाले इतना तो ज़रा सोच,
तेरा वजूद क्या था जो करता ना खुदा याद।

Translation :-

O' doubting Thomas, think of what
your worth or entity would be if God decided to keep you out of his mind.

अभी हाल ही में करीब बीस वर्ष बाद किसी की लिखी हुई यह पंक्तियाँ पढ़ीं :

खूब जमेगी हम दोनों में मेरे जैसा तू भी है
थोड़ा झूठा मैं भी ठहरा थोड़ा झूठा तू भी है।
एक मुद्दत से फासला कायम सिर्फ हमारे बीच ही क्यों
सब से मिलता रहता हूँ मैं सब से मिला तू भी है।

इन को पढ़ कर मेरे मन ने कहा कि कोई मेरे मालिक से खेल रहा है और चुनौती दे रहा है। यह पंक्तियाँ किसी पुरज़ोर खुदा के मानने वाले ने एक मस्त अवस्था में लिखी हैं।

तो ईश्वर की तरफ से उस बात का जवाब कुछ इस तरह मेरे मन में आया :

एक फलक में एक ज़मी पर मेरा भेजा तू भी है
मेरे झूठ से दुनिया चलती मेरा पुर्ज़ा तू भी है
जिस पल तू सच को अपनाए मेरे जेसा तू भी है
त्याग अहम् को ब्रम्ह में आ जा मेरा प्यारा तू भी है
जन्म जन्म से साथ हूँ तेरे फिर भी प्यासा तू ही है
मैं और तू के इस चक्कर का आज तो मारा तू भी है
आज गमों से मारी दुनिया हर पल कहती तू ही है।

मैं तो बस इतना समझा हूँ कि ज्ञान और ईश्वर में श्रद्धा तो हमारे अन्दर ही है और उसकी वर्षा हमारे चारों तरफ हो रही है।

हमें ही अपने विचारों व मन को सकारात्मक (Constructive) रखना है।

रवि–शशि

एक अज़ब सा चिड़ियाघर देखा मैंने अपने ही मन में,
तरह तरह के जीव पनपते देख इस छोटे से प्रांगण में,
वाक पटुता तोते जैसी,
और कुचालें हिरनों वाली,
दम्भ मोर सा ज्ञान हंस सा,
स्नहे गाय एक करने वाली,
क्रोध का बिच्छु अकसर आता,
विचरण करता ज़हर फैलाता,
नाग विषैला कर्म फलों का,
फन फैलाए खूब डराता।
छोटी सी आशा की चिड़िया,
चूँ चूँ कर सबको हर्षाती।
मति भ्रष्ट कर कभी निशाचर उल्लू अपने अपने रंग दिखलाता,
तरह तरह के इन जीवों से ही मानव की वृति होती है।
कभी हंस को उल्लू काटे,
कभी मोर उस पर पसराया,
सर्प गाय के थन से लिपटा,
और बिच्छु ने डंक उठाया।
देख चिड़ी आशा की उड़ते,
भय के बाज़ ने पंख फैलाया।
फिर भी गाय ने स्नेह ना छोड़ा,
और हंस अब भी उड़ता है।
ईश्वर की कृति है यह मानव,
गुण अवगुण इसमें बसते हैं।
सब जंगली पशु बस में रहते हैं
अच्छी सोच, सही आचारे ही तो यहाँ के रखवाले हैं।

इस मार्ग में गुजरते वक्त दुःख के ही क्षण होते हैं। किन्तु इससे निराश होना सही नहीं है। वह एक घटना है उसे जीतना यही गुरू मार्ग है।

मार्ग में दो बातें : अपने आप पर काबू रखना और आने वाले दुःख को सुख समझ कर बर्दाश्त करना

AA 'kHk Hkor AA।

विनम्र निवेदन

अति हर्ष के साथ आप सभी गुरुबंधु एवं भगिनियों को सूचित किया जाता है कि मासिक पत्रिका "तत्व बोध" का आगामी अंक एवं अन्य सूचना वेबसाइट पर एवं मेल द्वारा प्रेषित की जाएगी।

अतः आप सभी गुरुबंधु एवं भगिनियों से अनुरोध है कि आप सभी अपना ई–मेल पता एवं अन्य जानकारी यथाशिघ्र निम्न पते पर प्रेशित करें :

Sri Saikalp Adhyatm Sanstha

"Sai Niketan"

5, Jasola Vihar, New Delhi - 110025 Telephone : 26955261

E-mail : saikalp@gmail.com Dadab6@mail.com